Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852
Received: 15-01-2024, Accepted: 06-02-2024, Published: 28-02-2024
Volume 5, Issue 1, 2024, Page No. 3-4

महादेवी वर्मा की काव्य संवेदना का एक विश्लेशणात्मक अध्ययन

प्रमिला
विभाग हिन्दी, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोतक, रेवाड़ी, हरियाणा, भारत

सारांश
महादेवी वर्मा छायावाद की एक प्रतिनिधि हस्ताक्षर हैं। छायावाद का युग उथल–पुथल का युग था राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक आदि सभी स्तरों पर विभ्रम, द्वंद्व संघर्श और आन्दोलन इस युग की विशेषता थी।
महादेवी जी अपनी काव्य रचनाओं में प्रायः अंतर्मुखी रही हैं। अपनी व्यथा वेदना और रहस्य भावना को ही इन्होंने मुखरित किया है। उनकी कविता का मुख्य स्वर आध्यात्मिकता ही अधिक दिखायी देता है। यद्यपि उनका गद्य रचनाओं में उदार और सामाजिक व्यक्तित्व काफी मुखर है। उनकी कविताओं में उदात प्रेम का व्यापक चित्रण मिलता है। अलौकिक प्रिय के प्रति प्रणय की भावना नारी–सुलभ संकोच और व्यक्तिगत तथा आध्यात्मिक विरह की अनुभूति उनके प्रणय के विविध आयाम है। महादेवी की कविता में सौंदर्य के विविध रूपों का मनोहर चित्रण हुआ है। उनकी सौंदर्यानुभूति विलक्षण हैं। वह अपनी कविताओं में सौंदर्य के सूक्ष्म रूप का ही प्रतिष्ठित और चित्रित करती है। महादेवी वर्मा का सौंदर्य को 'सत्य प्राप्ति को साधन' मानती है और उनकी सौंदर्यानुभूति प्रकृति तथा मानव जीवन दोनों की ओर आकृश्ट होती है। जहां वह प्रकृति के विभिन्न रूपों में विराट सौंदर्य के दर्शन करती हैं वहीं नारी के विविध रूपों का भी उन्होंने चित्रण किया है।
छायावादी कवि चतुश्ठय में महादेवी वर्मा का महत्वपूर्ण स्थान हैं।

मूल शब्दः महादेवी वर्मा, सामाजिक, सांस्कृतिक, छायादवादी काव्य

महादेवी की काव्य संवेदनाः छायादवादी काव्य एक नई संवेदनशीलता का काव्य था। इस युग के कवि विशिष्ट अर्थ में संवेदनशील थे। महादेवी वर्मा के संदर्भ में उनका व्यक्तित्व अपनी इन्द्रधनुशी आभा लिए उनके काव्य लोक में उपस्थित होता है। इस प्रसंग में उनका नारी होना उनके पक्ष में जाता है। उन्होंने काव्य रचना को अत्यंत गंभीरता से लिया है। उनकी जीवन दृश्टि मानवीय गुणों से संपृक्त और संवेदनाओं से अनुप्राणित है। उसमें उदात्त और गौरवमय भाव मिलते हैं। और समस्त प्राणि–जगत के प्रति उनकी करूणा उमड़ी पड़ती है।
महादेवी वर्मा की कविता में दुःख और करूणा का भाव प्रधान है। वेदना के विभिन्न रूपकों की उपस्थिति उनके काव्य की एक प्रमुख विशेशता है। वह यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं करती कि वह 'नीर भरी दुःख की बदली है वस्तुतः समूचा छायावादी काव्य ही व्यक्तिवाद का प्रभाव लेकर चला और वहां आत्माभिव्यक्ति को सहज ही स्थान मिला। एक विचित्र सा सूनापन एक विलक्षण एकाकीपन बार–बार उनकी कविताओं में उमड़ता दिखाई देता है। अल्पायु में ही विवाहित होने के बाद उन्होंने स्वेच्छा से एकांत जीवन का चयन किया। उनका यह कथन इस वक्तव्य की पुश्टि करता है–
हमारे असंख्य सुख हमें चाहे मनुष्यता की पहली सीढ़ी तक भी न पहुँचा सके, किंतु हमारा एक बूंद आंसू भी जीवन को अधिक मधुर अधिक उर्वर बनाए बिना नहीं गिर सकता।
(यामा/अपनी बात) निष्ठुर दीप–सी, तिल– तिल जलती कवयित्री अपने काव्य में इस व्यक्तिगत व्यथा को शब्द देने में संकोच नहीं करती। जब व्यक्ति वेदना के अनुभव से गुजर चुका है और उसकी तीव्रता के दंश सह चुकता है तो वह पराई पीर को उसी धरातल पर खड़े होकर समझ सकता है। यहीं से उसमें समग्र मानव जाति के दुखों के प्रति सहानुभूति और करूणा के भाव जन्म लेते हैं। महादेवी के वेदना भाव प्रासाद की दूसरी आधारभूमि मानवतावादी भावभूमि है। मानव मात्र के प्रति करूणा का प्रत्यक्षीकरण महादेवी के गद्य लेखन में देखा जा सकता है। (दीपशिखा) महादेवी की अनुपम कृति है।
महादेवी के संदर्भ में कुछ आलोचक व्यक्तिगत एकाकीपन और अभाव को भी रहस्यानुभूति का कारण मानते हैं। जो भी हो, महादेवी और रहस्यवाद एक–दूसरे के पर्याय बन गए हैं। महादेवी वर्मा की रहस्यानुभूति पर यदि हम सतर्क दृश्टिपात करें तो हम देखेंगे कि उनके काव्य में रहस्यवाद के सभी चरणों की अभिव्यंजना हुई है।
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में कहें तो– 'छायावादी कहे जाने वाले कवियों में केवल महादेवी जी ही रहस्यवाद के भीतर रही हैं'।
पुण्य की अभिव्यक्ति को छायावादी कविता में महत्वपूर्ण स्थान मिला है। छायावाद का काव्य भारतीय नारी के नवोत्थान का काव्य था, जब वह समाज में बराबरी का दर्जा पाने के लिए संघर्श कर रही थी अपने पारम्परिक रूढिगत बंधनों को तोड़ने का यत्न कर रही थी औश्र पुरूश की व्यावहारिक सहचरी बनने की दिशा में अग्रसर हो रही थी। उधर पुरूश को भी यह लगने लगा था कि स्त्री को उसके विशुद्ध में समझा जाना चाहिए।
उनके काव्य में प्रेम एक मूल भाव के रूप में प्रकट हुआ है। उनका प्रेम अशरीरी है यह करूणा से आप्लावित प्रेम हैं। अलौकिक दिव्य सत्ता के प्रति उनकी इस प्रणयानुभूति में दाम्पत्य प्रेम की झलक भी मिलती है। और लौकिक स्पर्श का आभास भी। उनके प्रेम का उद्गम प्रकृति में है, जिसके विराट सौंदर्य से प्रभावित हो वह उसकी और आकर्शित होती हैं और माधुर्य मूलक प्रेम में खो जाती है। वह आत्म–समर्पण प्रेम भी करती हैं और अपने अभिमान को भी तिरोहित नहीं करती। उनकी कविताओं में प्रणय की अभिव्यंजना अनुपम और अनूठी है।
'सौंदर्य की उद्भाविका' महादेवी वर्मा सौंदर्य की अद्भुत चितेरी हैं। उन्होंने ब्रह्मांड में सौंदर्य के दर्शन किए हैं और इस अनुभूति से गुजरते हुए उन्होंने इसके विविध रूपों का चित्रांकन अपनी लेखनी से किया है। उनका काव्य सौंदर्य के विविध रूपों की छवियाँ बिखरी पड़ी है। महादेवी ने अपनी व्यक्तिगत प्रणयानुभूति और वेदनानुभूति की अभिव्यक्ति के लिए भी प्रकृति का सहारा लिया। उनके काव्य में दिव्य पुरूश, प्रकृति नारी के माध्यम से

सौंदर्य को अभिव्यक्ति मिली है। उनकी कविताओं में चित्रित सौंदर्य स्थूल न होकर सूक्ष्म और आंतरिक सौंदर्य है।

सारांश

छायावादी कवियों के प्रकृति चित्रण की एक अनूठी विशेशता यह रही कि उन्होंने प्रकृति पर नारी रूप का आरोपण किया। निराला ने यह स्वीकार किया है कि 'कोमलता लाने के लिए स्त्री स्वरूप की कल्पना से बढ़कर और कौन–कौन सी कल्पना होगी।

महादेवी वर्मा भी इसका अपवाद नहीं है। बल्कि छायावाद युग में स्त्री की नव प्राप्त छवि और स्वतंत्रता से प्रेरित होकर स्वयं स्त्री होने के नाते महादेवी ने नारी–मुक्ति की चेतना को कहीं अधिक सुंदर ढंग से व्यक्त किया है।

महादेवी ने जो रूपक बांधे हैं, उनमें अधिकतर प्रकृति पर नारी रूप का आरोपण ही मिलता हैः–

दमक उठे विधुत के कंकण।

महादेवी क्योंकि प्रकृति के समस्त उपकरणों समस्त व्यापारों में उस दिव्य सौंदर्य के ही दर्शन करती हैं, इसलिए उन्होंने प्रकृति के सभी उपादानों, सभी रूपों का चित्रण अपनी कविताओं में किया है।

इस प्रकार हमने देखा कि छायावाद की एक प्रतिनिधि हस्ताक्षर महादेवी वर्मा अपने युगीन यथार्थ से संवेदना के धरातल पर किस प्रकार प्रभावित होती है और अपने काव्य में इसे किस प्रकार अभिव्यक्त करती है।

इस संदर्भ में हमने यह भी देखा कि उन्होंने छायावाद युगीन मुक्ति– आकांक्षा को किस प्रकार अपनी कविता, अपनी रहस्यानुभूति में स्थान दिया। हमनें यह भी समझा कि महादेवी का छायावादी रहस्यवाद किस प्रकार मध्ययुगीन संतो के रहस्यवाद से भिन्न है।

अन्त में हमने देखा कि उनके काव्य में दिव्य पुरूश, प्रकृति और नारी के माध्यम से सौंदर्य का चित्रण हुआ है।

संदर्भ सूची

1. महादेवी के काव्य में लालित्य योजना, डॉ. राधिका सिंह नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली प्र. सं. 1979।
2. छायावाद का समाजशास्त्र, डॉ. शशि मुदीराज, परिमल प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1988।
3. महादेवी संस्मरण ग्रंथ (संपा.) पंत तथा शांति जोशी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र. सं. 1967।
4. महादेवी वर्मा, शचीरानी गुर्टू, आत्माराम एंड संस दिल्ली, प्र. सं. 1970।
5. महादेवी के काव्य में लालित्य विधान, डॉ. मनोरमा शर्मा, साहित्य संस्थान कानपुर, प्र. सं. 1976।